



पंकज मित्र की कहानियों में भूमंडलीकरण का सामाजिक प्रभाव

नीता पाण्डेय

(शोध छात्र) श्री गोविन्द गुरु यूनिवर्सिटी गोधरा, गुजरात

साल २००० के बाद कथाकारों की जो नई पीढ़ी हमारे समक्ष आई उसे हम "भूमंडलोत्तर कथा दृष्टि" के नाम से भी जान सकते हैं। पंकज मित्र इस कथा पीढ़ी के शुरुआती कथाकारों में से एक है, इनकी कहानी 'पड़ताल' को हम इस कथा – पीढ़ी की पहली कहानी भी मान सकते हैं जो फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी और संजय खाती की कहानी 'पिंटी का साबुन' की अगली कड़ी है जिसमें हम बाजार के अत्यंत क्रूरतम विडंबनाओं के स्वरूप को बिलकुल सहज तौर से देख सकते हैं। पड़ताल कहानी के बाद पंकज मित्र ने 'विजय मास्टर', 'बेला का भू' और 'हुड्डकलुलू' जैसी कई यादगार कहानियों के माध्यम से हिंदी कहानी के क्षेत्र में अपनी पुख्ता पहचान बनाई। इन कहानियों में हम हिंदी कहानी के समकालीन उद्भव और विकास को महसूस कर सकते हैं। पंकज मित्र के 'जिद्दी रेडियो' कहानी संग्रह पर बात करते हुए इनकी पूर्ववर्ती कहानियों को याद करना स्वाभाविक बन जाता है। इन सभी कहानियों ने पंकज मित्र को कथाकार के रूप में एक पुख्ता पहचान प्रदान की। इन कहानियों ने उनके समक्ष कथाकार के रूप में एक चुनौती भी पेश की है। इसलिए इन कहानी संग्रहों को याद करके उनकी समीक्षा के क्रम में उन कहानियों पर हम बतौर कथाकार उनकी विकास – यात्रा की भी पड़ताल कर सकते हैं।

आर्थिक उदारीकरण के अजेंडे को लागू किए जाने के बाद हमारे समाज में आए बदलावों की भूमिका और उसके ढांचागत प्रभावों का बारीक विश्लेषण ही अमूमन पंकज मित्र की कहानियों में एक रोचक कथा प्रसंग की तरह उपस्थित होता है। विश्वग्राम की परिकल्पना और उसकी अवधारणा उसे मूर्त किए जाने के प्रयासों को किसी कसबे या गाँव को शहर में बदलते शहर देखना हो तो हमें पंकज मित्र की कहानियाँ अवश्य पढ़नी चाहिए। भाषा और मुहावरे की स्थानीयता और उसकी प्रस्तुति से भरी इनकी कहानियाँ आर्थिक परिवर्तनों से उत्पन्न सामाजिक जटिलताओं और वैयक्तिक महत्वाकांक्षाओं की दुरभिसंधि का मुआयना भी करती हैं और उन पर एक सार्थक टिप्पणी करते हुए प्रतिरोध के एक प्रतिसंसार भी रचना चाहती है। यहाँ हम भाषा के जिस स्थानीय मुहावरे और आस्वाद की बात कर रहे हैं वह दरअसल पंकज मित्र के कथा – भूगोल का केन्द्रीय हिस्सा है जहाँ कथानक का मर्म और उसकी संवेदनाएँ बसती हैं।

रूढ़ियों और मिथक से भरे कितने धार्मिक अनुष्ठान जिनकी उपस्थिति के कारण कई बार हमारी जड़ों की पहचान होने का दावा करती हैं, इस औचित्य को हँसते – खेलते उंगली उठाने की जो सामर्थ्य पंकज मित्र की कहानियों में पाई जाती है, उसका बहुत सारा श्रेय उनकी ग्राम्य प्रधान भाषा और जीवंत मुहावरों के प्रयोग के साथ वहाँ के

ग्राम्य जन – जीवन में व्याप्त बारीकियों को मजबूती के साथ पकड़ने की उनकी शक्ति काफ़ी सराहनीय है। इसके लिए हम उदाहरण के तौर पर उनकी कहानी संग्रह की एक अति महत्वपूर्ण कहानी "बिलौती महतो की उधार – फिकिर" का उदाहरण सहजता से प्रस्तुत कर सकते हैं। इस कहानी में एक घटना मात्र इतनी है कि गाँव के कुछ बच्चे अड़तालीस घंटे तक अखंड चलने वाले अष्टयाम कीर्तन के लिए चंदा मांगने बिलौती महतो के पास आते हैं, जो स्वभाव से एकदम कंजूस प्रकृति के हैं। इस प्रकरण में चंदा न देने की भावना को बड़ी तार्किकता के साथ जिस तरह आवरण में लपेट कर बिलौती महतो को प्रस्तुत करते हैं, वह घटना काफ़ी दिलचस्प है – "कोनची के चंदवा हौ बाबू।" बिलौती ने मुस्कराकर पूछा जिस मुस्कराहट के बारे में प्रसिद्ध था कि इस मुस्कान का मतलब है – 'गयी भइस पानी में।'

"वही अष्टयाम कीर्तन के पूरा अड़तालीस घंटा तक नान – स्टौप चलतौ रामधुन स" लड़कों ने धर्मभावुक होकर कहा था।

"बाप के नाम का हौ बाबू?" एक को पकड़ा था बिलौती ने।

"बैजू।"

"आर, माय के, झुनिया ठीक न ?"

"हां। लड़का अकबकाकर साथियों को देखने लगा।"

"त बैजू और झुनिया के बीच में बैठा के दस आदमी चारों तरफ से अड़तालीस घंटा तक चिल्ला – चिल्ला के बैजू – झुनिया, बैजू – झुनिया करतौ तो कि हाल होतौ बप्पा – मैया के, वैसने लगतौ बाबु ! सीता राम के भी, दोनों, भाग जैथु।"

यहाँ पर हम स्पष्ट देख सकते हैं कि किस तरह से एक कंजूस व्यक्ति का चंदा न देने का बहाना दिखने का यह संवाद कितनी आसानी से अष्टयाम और कीर्तन जैसे धार्मिक अनुष्ठानों के औचित्य पर प्रश्न खड़ा कर जाता है जो एक गंभीर चर्चा और तर्क का विषय है। यहाँ यह देखा जा सकता है की संभवतः कोई दूसरा कथाकार इन सवालों को प्रस्तुत करने के लिए लंबे – लंबे भाषणनुमा अनुच्छेद लिख देता परन्तु पंकज मित्र जिस तरह कथा – रस की जीवंतता को बरकरार रखते हुए कईयों सवाल खड़े करते हैं, वह उनकी कहानियों को विशिष्ट बनाता है।

पंकज मित्र स्थानीय भाषा – बोली के सहारे लोक और समाज की परम्पराओं और रूढ़ियों में घुसकर समय और सभ्यता के बेहद जरूरी और प्रासंगिक सन्दर्भों से टकराने की उनकी सामर्थ्य उन्हें

कथाकार के रूप में विशेष बनाती है। कहानी के केंद्र में नई आर्थिक व्यवस्थाओं के आने के बाद आए सामाजिक और व्यावसायिक बदलावों की व्यापक पड़ताल पाई जाती है। अब पहले जैसी खेती और दूसरे व्यवसाय नहीं रहे। मानसून और महाजन की कृपा से कभी तेज तो कभी मद्धम या सुस्त चलने वाली खेती आज बिल्कुल नए तरीके के साथ हमारे सामने है। लेकिन संसाधन की जरूरत और उसकी किल्लत तथा कृषि उत्पादों की बिक्री और उनके उचित मूल्य का प्रश्न आज भी ज्यों का त्यों बना हुआ है। धान, गेहूं और अन्य पारंपरिक अन्नो की खेती के सामानांतर विलायती और हाइब्रिड टमाटर की खेती तथा बैंकों के नवीन लोन – व्यापार के भरे आधुनिक आर्थिक सन्दर्भों की विडम्बनाओं की बहुत जरूरी समीक्षा करती है यह कहानी।

भूमंडलीकरण की शुरुआत के बाद के सामाजिक और आर्थिक बदलावों के एक अलग पक्ष को उदघाटित करती कहानी है – 'बिजुरी महतो की अजीब दास्तान', जिसमें इस बात को दर्शाया गया है कि अफसरशाही और नौकरशाही कैसे कुछ खास दलीय और व्यावसायिक घराने के आर्थिक एजेंडों को लागू करने के चक्कर में न सिर्फ बड़े सामाजिक हितों की अनदेखी करती है बल्कि आम लोगों के बीच छुपी हुई प्रतिभाओं को भी बली ले लेती है। इस कहानी में कौलेश्वर की त्रासदी हमें बतौर पाठक और उससे भी ज्यादा बतौर एक जिम्मेदार नागरिक एक अजीब तरह के संवेदनात्मक आघात से भर देती है। 'बिलौती महतो की उधार – फिकिर' में बिलौती का माइंड गड़बड़ा जाना हो या 'बिजुरी महतो की अजीब दास्तान' में कौलेश्वर का विक्षिप्त हो जाना, दोनों ही स्थितियाँ इस त्रासदी का प्रतिक हैं कि सत्ता और व्यवस्था का रूक्ष और अवहेलनात्मक व्यवहार कैसे एक सामान्य नागरिक को जीने की तमाम लालसाओं के बीच तिल – तिल कर मरने को छोड़ देता है।

पंकज मित्र उन कथाकारों में से हैं जिन्हें कहानी की तलाश में न तो किसी सुदूर प्रदेश की यात्रा करनी होती है और ना ही सुचना प्रौद्योगिकी के सहारे किए गए किसी शोध या संचारों का मुखापेक्षी ही होना होता है। अपने आस – पास के जीवन और समाज पर एक सतर्क और तीखी नजर और दिन प्रतिदिन जीवन जगत में घटित हो रहें बदलावों को उसकी तह तक जाकर समझ लेने का कलात्मक हुनर ही उनकी कहानियों का सामियाना बांधता हैं। जिद्दी रेडियो कहानी में रेडियो पर आने वाले विविध कार्यक्रम हों या फिर कोर्ट कचहरी में प्रयुक्त होने वाले टाइप राइटर की खटखट की आवाज का वर्णन हो। कसबे की एक लोककथा बतर्ज बंटी और बबली कहानी में हमारी दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुके कमर्शियल फिल्मों के लोकप्रिय गीत हों। जोगड़ा कहानी में योग से योग बन कर नई महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के सफर पर निकले बावा वेषधारियों के नए कारोबार का सूक्ष्म निरीक्षण देखा जा सकता है। इन सभी कहानियाँ जिस तरह अपनी प्रस्तुति में साधारण दीखते हुए भी कहानी की रचनात्मकता को असाधारण ऊँचाई तक ले जाते हैं, यही विशेषता पंकज मित्र को अपने समय और अपने साथ के अन्य कहानीकारों से अलग खड़ा कर देती हैं।

'रोटी, कपड़ा, और मकान की तरह अपना खुद का घर होना भी न्यूनतम बुनियादी जरूरतों में से एक है। लेकिन यह सपना पूर्ण होना

कितना कठिन और दुष्कर होता है यह बात हम में से अधिकांश लोग अपने – अपने अनुभवों के माध्यम से जान और समझ सकते हैं। घर में दूसरी अन्य कई जरूरतों की कटौती करके बचाए गए थोड़े बहुत पैसे, किस तरह से बैंक और अन्य वित्तीय संस्थाओं से लिए गए ऋण को ई.एम.आई. कटने के बाद हमारे पास बची रह गई शेष राशि हर महीने की तनखाह का एक छोटा – सा हिस्सा जो हमेशा ही अनुपात में छोटे पड़ने वाले चादर की तरह ही होता है। भू – माफियाओं की गिद्ध दृष्टि, कोर्ट कचहरी में उपस्थित छोटे – बड़े दलाल आदि के बीच एक सामान्य आदमी के घर खरीदने का सपना कैसे क्षत – विक्षत कर देता है यह हम, 'प्रो. अनिकेत का निकेतन' कहानी में बहुत बारीकी से समझ सकते हैं। इस कहानी का प्रमुख पात्र अनिकेत बाबू है। अनिकेत दृ का तात्पर्य होता है जिसका खुद का घर नहीं होता है, यह विरोधाभास स्थिति इस कहानी में पाई जाती है। कहानी में इस बात का वर्णन है कि अनिकेत के पिता को उनके कई परिचित लोगों और शुभचिंतकों ने यह नाम रखने से मना किया था लेकिन उन्होंने किसी की भी बात नहीं सुनी और यह नाम रख दिया। कहानी की विडम्बना यही है की कैसे कोई व्यक्ति ईट – ईट जोड़ कर मकान बनाता है और किस तरह मुजबूरन उस घर को उसे छोड़ कर एक दिन अनिकेत बाबू को फिर से किराए के घर में रहने जाना पड़ता है। यह कहानी व्यवस्था के एक बड़े सच को उजागर करती है, लेकिन पात्र के नाम का अनिकेत होना कहीं न कहीं उस मिथ की भी पुष्टि करता है कि अनिकेत के बेघर रह जाने का एक कारण उसके नाम में है? यहाँ पर हम यह कह सकते हैं कि आज भी हमारे समाज का एक बड़ा हिस्सा किसी समस्या के सही कारणों को नहीं जानने के कारण तरह – तरह की रूढ़ियों और मिथकों से उलझता हुआ दुःख और अभाव में जीवन जीने को विवश हो जाता है।

'सेंदरा' इस कहानी संग्रह की आखिरी कहानी है जो कई कारणों से महत्वपूर्ण कही जा सकती है। विस्थापन और मुआवजा की बात करते हुए एक दुसरे की चर्चा अनिवार्यतः आवश्यक बन जाती है। कहानी में बताया गया है कि विकास के नाम पर कैसे सरकार के द्वारा आदिवासियों की जमीन का हड़प लेना, खरीदा जाना और खरीद – बिक्री की इस समग्र प्रक्रिया के दौरान मुआवजे और पुनर्वास की सरकारी योजनाओं को लेकर लोगों के बीच पनपते असंतोष आदि को कहानीकार ने काफी प्रमाणिकता के साथ अभिव्यक्त किया है। आदिवासी जनजीवन पर आधारित इस समय में लिखी गई कहानियों में इस कहानी को महत्वपूर्ण बनाती है।

समकालीन कहानी में समीक्षकों के द्वारा अक्सर यह शिकायत की जाती है कि अच्छी प्रेम कहानियाँ इन दिनों में नहीं लिखी गई हैं। दरअसल इस तरह की शिकायत करते हुए हम कह सकते हैं कि या तो हम इन दिनों में लिखी जा रही तमाम प्रेम कहानियों को ठीक से नहीं पहचानते हैं और या फिर हमारे लिए प्रेम, समय और समाज से कटी हुई कोई भिन्न और अलग चीज होती जा रही है। 'पप्पू कांट लव सा...' कहानी इस संग्रह की एक महत्वपूर्ण कहानी है जिसमें प्रेम करने के सपने और प्रेम न कर पाने की विवशता के बीच की आर्थिक विपन्नता की भूमिका को रेखांकित करती है। कहानी में वर्णन है कि एक मैकेनिक का बेटा पप्पू कॉम्पिटिशन पास करने के बावजूद न तो इंजीनीयर बन पाया। उसकी सभी कोमल भावनाओं और एकात्म

समर्पण के बावजूद उसे सुवि शर्मा का प्यार ही मिला। यहाँ यह कहा जा सकता है कि इन दोनों ही परिणतियों के मूल में बस एक ही कारण है उसका गरीब होना और गरीब घर में गरीब बाप का बेटा होना। गरीबी एक ऐसा अभिशाप है जिसके कारण एक तरफ बैंक एजुकेशन लोन देने से मुकर जाती है बल्कि दुसरी तरफ शमीमा, सुवि शर्मा बनकर उसे अपने एस. एम. एस. से सिर्फ परेशान करके प्रेम का एक भ्रमजाल रचती है और उसकी जिंदगी तबाह कर देती है। पप्पू की विडंबना तब और त्रासद हो जाती है जब सुवि शर्मा के प्रति उसके एकतरफा प्रेम के मूल में शमीमा की क्रूर हरकतें छिपी रहती हैं। ऊँची जाति के लड़के इस बात को सच मानकर उसके इस प्रेम के भ्रम की सजा उसे वैंलेंटाइन डे के दिन ही उसकी बुरी तरह पिटाई करके देते हैं। यह कहानी जिस तरह प्रेम के बहाने समाज में व्याप्त आर्थिक खाइयों को हमारे सामने खड़ा करती है वह कई आर्थिक – सामाजिक हकीकतों पर से भी परदे हटाती है। इस तरह हम कह सकते हैं की यह कहानी बिना प्रेम के घटित हुए भी पूँजी और बाजार से उत्पन्न संक्रमणकाल की सभी विडंबनाओं और समस्याओं को उजागर करती है जो निरंतर न जाने कितने संभावित प्रेम की बली चढ़ाता है।

भाषा की स्थानीयता और हर रोज बदल रहे गाँव – कस्बों में दिख रहे आर्थिक बदलावों की पृष्ठभूमि पंकज मित्र की कहानियों का अभिन्न हिस्सा है। इसके अतिरिक्त पंकज मित्र की ज्यादातर कहानियों से गुजरते हुए दो मुख्य बातें हमारा ध्यान ज्यादा खींचती हैं, एक – इन कहानियों का लगभग अनिवार्यतः दुःखांत होना। और दूसरी बात लगभग यह है कि उनकी हर दूसरी कहानी में पीढ़ियों के बीच का अंतर के कारण पीढ़ियों की टकराहट का उत्पन्न होना भी है। ये सारी विशेषताएँ हमारे भूमण्डलीय समय का सच हैं, और इससे भला कोई कैसे इनकार कर सकता है।

आजकल के उस उक्त विशेषांक के बाद १९६७ में प्रकाशित इंडिया टुडे की साहित्य वार्षिकी – ‘शब्द रहेंगे साक्षी’ में पहली बार दीखते हैं – पंकज मित्र अपनी पड़ताल शीर्षक कहानी के साथ, जिसे युवा कथाकार प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उल्लेखनीय है कि यही कहानी इसके ठीक दो – एक महीने के बाद ‘हंस’ में भी प्रकाशित हुई थी। तत्पश्चात फरवरी २००१ में प्रकाशित हंस की विशेष प्रस्तुति – नई सदी का पहला बसंत में दिखाई पड़ते हैं। नवलेखन अंकों की सुदीर्घ परंपरा से चुन – छनकर आए इन्हीं कथाकारों से परत – दर – परत बनती है भूमंडलोत्तर समय की यह कथा पीढ़ी। नए कथाकारों को पहचानने और प्रकाश में लाने का यह समवेत और सहयोगी सिलसिला लगातार जारी है। इस क्रम में ‘परिकथा’ के नवलेखन अंकों और युवा कहानी विशेषांकों के अतिरिक्त प्रगतिशील कहानी अंक तथा ‘हंस’ और ‘कथाक्रम’ जैसी पत्रिकाओं के ‘मुबारक पहला कदम’ और ‘कथा दस्तक’ जैसे स्तंभों की भूमिका उल्लेखनीय है।

नई कथा पीढ़ी के विकास और निर्मिति पर यह टिप्पणी अधूरी होगी यदि उन प्रवृत्तियों पर चर्चा न की जाए जो इस पीढ़ी को अपने पूर्ववर्ती कथाकारों से अलग करती करती है। नब्बे के दशक में अपना प्रभाव छोड़ता भूमंडलीकरण आर्थिक – सामाजिक रूप से एक नया प्रस्थान

बिंदु है। यह वही समय है जब भूमंडलीकरण के समानांतर सूचना और संचार क्रांति का उल्लेखनीय विस्तार आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक स्तर पर एक बड़े बदलाव की भूमिका लिखता है। नई – नई सूचनाओं और नए – नए उत्पादों के बीच हम मनुष्य से उपभोक्ता में तब्दील होने लगते हैं या कि कर दिए जाने लगते हैं। ज्ञान और जानकारी के खुलते नए गवाक्षों के बीच बाजार हमारी संवेदना को लगभग अपनी मुट्ठी में कैद कर लेता है और इसी बीच सदियों से दलित – दमित समुदाय अपने अधिकारों को लेकर सचेत हो जाते हैं। भूमंडलोत्तर समय में विकशित नई कथा – पीढ़ी की कहानियाँ बाजार और अस्मिता संघर्ष के विस्तार से उत्पन्न उन्हीं सामाजिक – आर्थिक विस्तार की उल्लेखनीय चिन्ह हैं।

इंडिया टुडे की साहित्य वार्षिकी (१९६७) – ‘शब्द रहेंगे साक्षी’ में प्रकाशित पंकज मित्र की कहानी ‘पड़ताल’ का यहाँ उल्लेख जरूरी है, जो अपने कथन और कहन दोनों ही स्तर पर हिंदी कहानी में एक नई पीढ़ी के आगमन की दस्तक है। हररोज हमारे जीवन – जगत में पोषित होता बाजार कैसे हमारे अचार – व्यवहार को ही नहीं हमारी जिंदगी की कई प्राथमिकताओं को भी प्रभावित करने लगता है इसे यह कहानी बहुत प्रभावी तरीके से चित्रित करती है। एक मध्यमवर्गीय परिवार को दहेज में मिला रंगीन टेलीविजन पुरे परिवार को इस हद तक कुंद और शिथिल कर देता है कि उसी परिवार का एक बुजुर्ग जिसने अपने खून पसीने से उस परिवारे के बिट्टे को सींचा था, पारिवारिक उपेक्षा का शिकार हो टेलीविजन के आने के ठीक आठवें दिन बरसाती में पड़ा दम तोड़ देता है। पंकज मित्र की इस कहानी को हम ‘पिंटी का साबुन’ कहानी से जोड़कर देख सकते हैं कि कैसे बाजारवादी शक्तियाँ हमारे निजी और सामाजिक जीवन को सुनियोजित और चरणबद्ध तरीके से बदलती जा रही हैं और उसे समझने के लिए ये कहानियाँ एक जरूरी सूत्र प्रदान करती हैं।

बाजार अपनी शुरुआती अवस्था में हमारे ज्ञानचक्षु खोलता है, हमारे भीतर कौतूहल और जिज्ञासा के बीज रोपता है। ‘पंचलाइट’ में इस तथ्य को बाजार का वही उत्पाद जब रोज नई – नई शक्लों में हमारे जीवन में दाखिल हो हमें लुभाना शुरू करता है तो हमारे भीतर पहले से बैठा कौतूहल और जिज्ञासा का शुरुआती भाव आसानी से प्रतिस्पर्धा में परिवर्तित हो जाता है। नए उत्पाद का आकर्षण हमें हर कीमत पर उसे हासिल करने के लिए प्रेरित करता है। ‘पिंटी का साबुन’ में एक साबुन की टिकिया को हासिल करने के लिए छोटे भाई द्वारा बड़े भाई का सर फोड़ देना बाजारप्रदत्त इसी प्रवृत्ति का परिचायक है। गौर किया जाना चाहिए कि कौतूहल से स्पर्धा तक का यह सफ़र भूमंडलीकरण के पहले तक का एक नितांत सच था। लेकिन नई आर्थिक नीतियों के लागू किए जाने के बाद बाजार का चेहरा और ज्यादा घातक, क्रूर और आक्रामक हो गया, इतना घातक कि कौतूहल से स्पर्धा तक की यात्रा कर चूका हमारा बर्ताव अब हमें इस कदर आत्मकेंद्रित करने में सफल हो गया कि हम निजी हितों के कारण रिश्ते, परिवार और समाज की उपेक्षा करने लगे हैं। निजी हितों के संधान में पारिवारिकता और सामाजिकता की एक ऐसी उपेक्षा हमने की है जिसे किसी के जीने – मरने की भी परवाह नहीं है। रंगीन टेलीविजन पर अमिताभ की फिल्म देखने में मशगूल परिवार के सभी सदस्यों के बीच उपेक्षित किशोरीरमण बाबू का ठंड से ठिठुर

कर मर जाना बाजार के दबाव में कुंद होती संवेदना और संबंधों के असंवेदनशीलता का ही नतीजा है।

सामूहिकता के संकुचन और 'मैं' के महत्वाकांक्षी विस्तार के बीच होनेवाले सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तनों को बारीकी से पकड़नेवाली किसी नए कथाकार की पहली कहानी होने के कारण 'पड़ताल' कहानी को हम इस कथा पीढ़ी का प्रस्थान बिंदु मान सकते हैं।

सन्दर्भ सूचि:

- (१) मित्र, पंकज, 'पड़ताल' (क.), 'क्विजमास्टर और अन्य कहानियाँ', आधार प्रकाशन, पंचकूला, संस्करण –२०११
- (२) मित्र,पंकज, 'बिलौती महतो की उधार फिकिर' (क.) 'जिद्दी रेडियो', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,प्र. संस्करण –२०१४
- (३) मित्र,पंकज, 'कसबे की एक लोक कथा बतर्ज बंटी बबली ' (क.) 'जिद्दी रेडियो', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,प्र. संस्करण –२०१४
- (४) मित्र,पंकज, 'सैंदरा' (क.) 'जिद्दी रेडियो', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,प्र. संस्करण –२०१४
- (५) मित्र,पंकज, 'प्रो.अनिकेतन का निकेतन' (क.) 'जिद्दी रेडियो', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. संस्करण –२०१४
- (६) मित्र,पंकज, 'पप्पू कांट लव सा ...' (क.) 'जिद्दी रेडियो', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,प्र. संस्करण –२०१४
- (७) मित्र,पंकज, 'क्विजमास्टर' (क.), 'क्विजमास्टर और अन्य कहानियाँ', आधार प्रकाशन ,पंचकूला, संस्करण –२०११
- (८) मित्र,पंकज, 'जोगडा' (क.) 'जिद्दी रेडियो', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. संस्करण – २०१४
- (९) मित्र,पंकज, 'बे ला का भू ' (क.) 'हुडुकलुल्लु', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,प्र. संस्करण –२००८